Online at: https://researchtrendsjournal.com
Indexed Journal

ISSN No: 2584-282X
Peer Reviewed Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 6; 2025; Page No. 168-172

Received: 16-08-2025
Accepted: 24-09-2025
Published: 14-11-2025

हिंदी पत्रकारिता की राष्ट्रीय चेतना पर भारतेंदु और द्विवेदी का प्रभाव

[1]अमिता ब्योहार, [2]विक्रांत शर्मा

[1, 2]हिंदी विभाग, मध्यांचल प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19209365

Corresponding Author: अमिता ब्योहार

सारांश

भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता ने जनमानस में स्वतंत्रता की भावना का बीजारोपण किया। 'कवि-वचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र मैगजीन', 'बाल-बोधिनी', 'भारत-दुर्दशा' जैसे पत्रों और कृतियों ने समाज को अन्याय, शोषण और अज्ञानता से मुक्ति के लिए प्रेरित किया। भारतेन्दु की पत्रकारिता में न केवल साहित्यिक सौन्दर्य था, बल्कि उसमें सामाजिक सुधार और राजनीतिक चेतना का भी स्वर गूंजता था। उनके लेखों में राष्ट्रहित सर्वोपरि था। यही कारण है कि उन्होंने पत्रकारिता को समाज सुधार का सबसे प्रभावशाली माध्यम बनाया। द्विवेदी युग में पत्रकारिता ने अधिक संगठित रूप ग्रहण किया। 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी भाषा को नई दिशा दी। उन्होंने हिन्दी पत्रकारिता को वैचारिक गंभीरता, शुद्ध भाषा और सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध कराया। उनके संपादन में 'सरस्वती' पत्रिका राष्ट्रीय पुनर्जागरण की प्रतीक बन गई, जिसमें साहित्य, शिक्षा, विज्ञान, समाज सुधार और राष्ट्र निर्माण के विषयों पर गंभीर विमर्श हुआ।

मूलशब्द: भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, पत्रकारिता, राष्ट्रीय चेतना

प्रस्तावना

पत्रकारिता मानव सभ्यता के विकास की एक महत्वपूर्ण निशानी है। भाषा और लिपि के विकास के बाद जागरूक और प्रबुद्ध समाज ने अपनी अभिव्यक्ति के लिए एक ठोस आधार प्रदान करने के लिए पत्रकारिता का विकास किया। यह विचारों को व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। आर.आर. खाडिलकर लिखते हैं कि दुनिया में कहीं भी, किसी भी समय, किसी भी छोटी घटना या परिवर्तन, शब्दों में उसका जो भी वर्णन हो, हम कलम में अक्षरों की शक्ति देखते हैं। कलम की शक्ति का एहसास बड़ी-बड़ी निरंकुश शक्तियों, शक्तिशाली और स्वतंत्र शासकों और दमनकारी और प्रतिक्रियावादी व्यवस्थाओं ने भी किया है।

समाज में जागरूकता विकसित करने और उसे व्यापक संदर्भों से जोड़ने का कार्य पत्र ही करते हैं। इस तरह समाचार पत्र या समाचार पत्र राष्ट्र के हृदय की अंतरात्मा है। यदि हम इतिहास के पन्नों को पलटें तो पाते हैं कि मानव सभ्यता के इतिहास में एक स्थान से दूसरे स्थान तक समाचार पहुंचाने का कार्य मुनि नारद ने किया था और त्रेता युग में यह कार्य पवनपुत्र हनुमान ने किया था। हनुमान ने अपने प्राणों की परवाह किए बिना रामचंद्र का

संदेश सीता के पास भेजा। द्वापर युग में संजय ने युद्ध के मैदान से मीलों दूर बैठे हुए हस्तिनापुर के अंधे राजा धृतराष्ट्र को महाभारत की पूरी घटना 18 दिनों तक सुनाई थी।

वहीं दूसरी ओर राजा लोग अपने संदेश और आदेश लोगों तक पहुंचाने के लिए शिलालेखों का इस्तेमाल करते थे। सम्राट अशोक ने अपने विचारों और धर्म का प्रचार करने के लिए शिलालेखों का माध्यम शुरू किया था। सम्राट अशोक ने कबूतरों को संदेशवाहक तक बना दिया था। कबूतर के गले में पत्र बांधकर उसे निर्धारित स्थान पर भेज दिया जाता था। वही कबूतर पत्र का जवाब लेकर अपने स्थान पर वापस आ जाता था। कबूतरों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक सूचना भेजने की प्रथा लंबे समय तक जारी रही। विश्व इतिहास में समाचार-पत्रों ने बड़े-बड़े परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लोगों को उनके कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति जागरूक करने, जनता के विचारों और शिकायतों को शासक तक पहुँचाने, शासक की नीतियों का मूल्यांकन करने, शासक के समर्थन और विरोध में प्रचार करने, हर प्रकार की क्रांति का सूत्रपात करने, यहाँ तक कि मानव जीवन के हर प्रयास को प्रभावित करने, आंदोलित करने और निर्देशित करने में समाचार-पत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पत्रकारिता के जनक अंग्रेज पत्रकार जेम्स ऑगस्टस हिक्की और विलियम डुआने माने जाते हैं।

भारतेन्दु द्वारा संपादित पत्र पत्रिकाओं में राष्ट्रीय चेतना

आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एक कुशल पत्रकार, कवि, नाटककार, निबन्धकार तथा आलोचक के रूप में प्रसिद्ध हैं। अपने छोटे से जीवनकाल में उन्होंने इतने महत्वपूर्ण कार्य किये कि उनका युग भारतेन्दु युग के रूप में प्रसिद्ध हो गया। वस्तुतः वे हिन्दी साहित्य के आकाश के चन्द्रमा थे। हिन्दी भाषा के क्षेत्र में भारतेन्दु के अविस्मरणीय योगदान के फलस्वरूप प्रसिद्ध पाश्चात्य लेखक पियर्सन ने लिखा है, हरिश्चन्द्र ही एकमात्र ऐसे श्रेष्ठ कवि हैं, जिन्होंने किसी अन्य भारतीय लेखक की तुलना में देशी भाषा में लिखे गए साहित्य को लोकप्रिय बनाने में सर्वाधिक योगदान दिया। 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम से सामाजिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान तथा राष्ट्रीय चेतना के जागरण के प्रयासों का श्रीगणेश हुआ।

इस क्रान्ति के पश्चात सम्पूर्ण भारत अंग्रेजों के अधीन आ गया तथा भारत ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथों से निकलकर विक्टोरिया के हाथों में चला गया। फलस्वरूप दमनकारी नीतियों में वृद्धि हुई तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर अनेक प्रकार के खतरे उत्पन्न हो गए। साथ ही, इस क्रांति के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण भारत में एक नई चेतना का विकास हुआ तथा उपनिवेशवाद विरोधी एवं स्वतन्त्रता प्राप्ति की चेतना जागृत हुई। अपने अभाव से निराश भारतीय जनमानस को जागृत करने तथा भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल पक्षों को उजागर कर उनमें नवजीवन का संचार करने में भी हिन्दी पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके माध्यम से पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के समन्वय ने इस नवजागरण में विशेष भूमिका निभाई।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अनेक जातिवादी, साम्प्रदायिक एवं धार्मिक समाचार-पत्र भी निकले, किन्तु कहीं न कहीं वे सभी देशभक्ति की भावना एवं राष्ट्रीय चेतना से जुड़े हुए थे। हिन्दी पत्रकारिता में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का प्रवेश एक क्रान्तिकारी घटना थी। उनके आगमन से हिन्दी पत्रकारिता को विकसित होने का अवसर मिला। उनके असाधारण योगदान को देखते हुए 1867 से 1900 तक के हिन्दी पत्रकारिता के काल को भारतेन्दु युग के नाम से जाना जाता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य एवं पत्रकारिता के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इस काल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने न केवल स्वयं समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं का संपादन किया, बल्कि लेखकों और संपादकों का एक समूह भी तैयार किया, जिसने हिंदी पत्रकारिता और साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान देने के साथ-साथ राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस समूह को भारतेन्दु मंडल के नाम से जाना जाता है।

भारतेन्दु के समय में देश में नवीन राजनीतिक और सामाजिक चेतना का उदय हो चुका था। आम जनता समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं में प्रकाशित समाचारों और लेखों पर अपनी प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करने लगी थी, तथा उनमें व्यक्त विचारों से आंदोलित भी होने लगी थी। भारतेन्दु के बारे में हिंदी साहित्य कोश (भाग-2) में लिखा है-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिंदी साहित्य में नए युग के अग्रदूत और आधुनिकता के प्रवर्तक थे। उनकी रचनाएँ देशभक्ति से ओत-प्रोत हैं। उन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज के हृदय विदारक पतन का चित्रण किया है, साथ ही उसके उज्ज्वल भविष्य की परिकल्पना भी की है।

भारतेन्दु युगीन अन्य पत्र - पत्रिकाओं में राष्ट्रीय चेतना

हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में भारतेन्दु युग (1868-1895) को राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण का युग कहा

जाता है। इस काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने न केवल हिन्दी साहित्य को नवजीवन दिया, बल्कि पत्रकारिता के माध्यम से भारतीय समाज में स्वदेश, स्वाभिमान और स्वतंत्रता की भावना का संचार किया। इस युग में हिन्दी भाषा को जनभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने, समाज-सुधार आंदोलनों को बल देने और राष्ट्र-चेतना को जगाने में अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभाई। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र स्वयं एक प्रभावशाली पत्रकार, लेखक और सामाजिक चिंतक थे, जिन्होंने हिन्दी पत्रकारिता को एक राष्ट्रीय स्वर प्रदान किया।

इस काल की प्रमुख पत्रिकाएँ जैसे 'कवि-वचन सुधा' (1867), 'हरिश्चन्द्र मैगज़ीन' (1873), 'बाल-बोधिनी' (1873), 'भारत-दुर्दशा', 'हिन्दी प्रदीप' (1877) और 'सुधाकर' (1882) आदि ने सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विषयों पर विचार-विमर्श को प्रोत्साहित किया। इन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों और संपादकीयों में ब्रिटिश शासन की नीतियों की आलोचना, भारतीय समाज की दुर्बलताओं पर चिंतन और देश की दयनीय स्थिति पर करुणा का मिश्रण देखने को मिलता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपने लेखों में भारत की आर्थिक, सामाजिक और नैतिक दुर्दशा का चित्रण करते हुए यह स्पष्ट किया कि जब तक भारतीय जनता आत्मनिर्भर नहीं बनेगी और शिक्षा प्राप्त नहीं करेगी, तब तक स्वतंत्रता का सपना अधूरा रहेगा।

'कवि-वचन सुधा' को इस काल का सबसे प्रभावशाली पत्र माना जाता है। इसके माध्यम से भारतेन्दु ने समाज के बौद्धिक वर्ग को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय भावना को जाग्रत किया। उन्होंने अपने संपादकीयों में कहा–"भारत माता की सेवा ही सच्चा धर्म है।" इस पत्र में स्वदेशी उत्पादों के प्रयोग, भारतीय उद्योगों के संरक्षण और विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यह पत्र जनता को राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराता था और इसने सामाजिक सुधार को राष्ट्रीय मुक्ति का अनिवार्य अंग बताया।

इसी प्रकार 'हरिश्चन्द्र मैगज़ीन' में भी राष्ट्रीय चेतना का स्वर गूंजता रहा। इस पत्र में भारतेन्दु और उनके सहयोगियों ने भारत की सांस्कृतिक अस्मिता, धार्मिक सहिष्णुता, और आत्मबल के महत्व पर बल दिया। इसके लेखों में यह विचार प्रमुख रूप से सामने आता है कि भारतीय समाज को पश्चिमी अंधानुकरण से बचकर अपनी सांस्कृतिक परंपरा में निहित मूल्यों को अपनाना चाहिए। यह पत्र अंग्रेज़ी शिक्षा के साथ-साथ भारतीय शिक्षा की अनिवार्यता पर भी चर्चा करता था, क्योंकि शिक्षा को राष्ट्रीय पुनरुत्थान का आधार माना गया था।

ज्ञानशक्ति, प्रभाकर, विजय एवं स्वदेश में राष्ट्रीय चेतना

राष्ट्रीय आन्दोलन में जन-जन को राष्ट्रीय विचारधारा में समन्वित करने हेतु स्वदेशी की भावना से ओत-प्रोत साप्ताहिक पत्र 'स्वदेश' का प्रकाशन गोरखपुर से 6 अप्रैल, 1919 को आरम्भ हुआ। अपने उग्र विचारों एवं स्वतन्त्रता के प्रति समर्पण की भावना के कारण 'स्वदेश' को जन्म से मृत्यु तक सरकारी कोपदृष्टि का शिकार होना पड़ा। प्रकाशन के पूर्व ही 'स्वदेश' से पाँच सौ रुपये की जमानत माँगी गयी थी।23 हिन्दी पत्रकारिता के क्रान्तिकारी प्रकाशनों के इतिहास में गोरखपुर से प्रकाशित 'स्वदेश' का विजयांक विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा।

'स्वदेश' ने ब्रिटिश सत्ता को खुली चुनौती दी। 7 अक्टूबर, 1924 के 'स्वदेश' के विजयांक में ऐसी विद्रोही तथा क्रान्तिकारी पाठ्य सामग्री थी कि वह तत्काल सरकार द्वारा जब्त किया गया।24 इस अंक में प्रसिद्ध व्यक्तियों के कुल उनतालीस लेख और कविताएँ प्रकाशित हुईं। वैसे तो सम्पूर्ण अंक ही विद्रोह और क्रान्ति को प्रतिध्वनित करने वाला था, परन्तु ब्रिटिश सरकार की दृष्टि में इसमें प्रकाशित भावी क्रान्ति (लेखक त्रिदण्डी), विजय (कविता, लेखक पण्डित रामचरित उपाध्याय) एवं विप्लव राग माँ (कविता, लेखक श्री रामनाथलाल 'सुमन') अत्यधिक आपत्तिजनक थे।25 1924 के 'स्वदेश' के विजयांक विशेषांक के सम्पादक पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' थे।

'स्वदेश' साप्ताहिक ने भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिये पाठकों से अपील की। 'वह हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं' के माध्यन से भारतवासियों को कर्त्तव्य-कर्म के लिये प्रेरित किया था। 'स्वदेश' का प्रकाशन उस समय प्रारम्भ हुआ जब हिन्दी-पत्रों का कोई नामलेवा नहीं था। पराधीन भारत में, खासकर उत्तर प्रदेश के निवासियों में स्वराष्ट्र-प्रेम की भावना जागृत करना ही 'स्वदेश' का मूल सिद्धान्त था। उसके प्रथम पृष्ठ पर अंकित होता था–

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।26

'स्वदेश' का विजयांक प्रकाशित होते ही विवादग्रस्त हुआ। 'स्वदेश' में प्रकाशित सरकारी दृष्टि से आपत्तिजनक लेखों

एवं कविताओं के प्रकाशन के अपराध में पं. दशरथ प्रसाद द्विवेदी को भारतीय दण्ड विधान की धारा 124-अ के अन्तर्गत दो वर्ष के कठोर कारावास और पचास रुपये अर्थदण्ड की सजा प्राप्त हुई। अर्थदण्ड न दे पाने की स्थिति में तीन माह का अतिरिक्त कारावास का भी दण्ड मिला।27 पत्र के सम्पादन के अपराध में पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' को भी उपर्युक्त धारा के अन्तर्गत नौ माह के कारावास का दण्ड मिला।28 इन राजाज्ञाओं के विरुद्ध पं. दशरथ प्रसाद द्विवेदी ने उच्च न्यायालय में अपील भी की थी, परन्तु वह अस्वीकृत कर दी गयी।

'स्वदेश' पत्र का मुख्य मनोरथ था स्वराज्य स्थापित होने पर ही हम अपने देश को स्वदेश का सौभाग्य-दिवस होगा। ईश्वर हमें पौरूष दे कि 'स्वदेश' जिस कमिश्नरी अथवा जिस खण्ड से प्रकाशित हो रहा है, वहाँ की भरपूर सेवा करते हुए वह अपने प्रान्त और देश के हर एक-एक कोने तक में नये जीवन का संचार कर दे।

द्विवेदी युगीन पत्रकारिता

दिनकर कर प्रगटत् दीन्हिन यः प्रकाश अथ यम्
ऐसो रवि आब उगौं माहीं, जेहि सुख को धाम।
अन्त कमलनि विगसित करत बधत् चव चित वाम्
लेट नाम या पत्र को होत हर्ष अरु कम।

सन 1788 में कानपुर में जन्मे शुक्ल जी कोलकाता के दीवानी कचहरी में प्रोसीडिंग रीडर थे और हिंदी प्रेमियों के लिए 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन करते थे। तब इसका मूल्य दो रुपये वार्षिक था। पत्र में प्रकाशित समाचारों और अन्य सामग्रियों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उन दिनों पत्रकारिता की नींव संघर्ष, त्याग और निर्भीकता पर रखी गई थी। देशी, विदेशी और स्थानीय समाचारों के अलावा हास्य-व्यंग्य पर टिप्पणियाँ और लेख भी प्रकाशित होते थे। इसमें सरकारी अधिकारियों की नियुक्ति, पाक्षिक पत्र, जहाजों के आने-जाने का समय और कोलकाता के बाजार भाव होते थे। उन्हें विश्वास था कि इस समाचार पत्र को सरकार और जनता का पूरा सहयोग मिलेगा और यह अपनी यात्रा निर्बाध जारी रखेगा। लेकिन उनकी यह आशा पूरी नहीं हुई। परिणामस्वरूप अपने सीमित संसाधनों और अल्प पूंजी के कारण उन्हें डेढ़ वर्ष बाद ही 4 दिसंबर, 1827 के अपने अंतिम अंक के साथ यह पत्र बंद करना पड़ा। इसके समापन अंक में उन्होंने अपनी व्यथा इस प्रकार व्यक्त की थी:-

आज दिवास्तौ उगी चुक्यों मरातंड उदन्त।
अस्ताचल को जात है दिन आब आँत।

'उदन्त मार्तण्ड' के बंद हो जाने के बाद भी शुक्ल जी के हृदय में पत्रकारिता की भावना हिलोरें मारती रही। फलस्वरूप 1850 में कुछ धन एकत्र कर उन्होंने 'शम्यदन्त मार्तण्ड' नाम से एक अन्य पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। यह शुक्ल जी की जीवंत पत्रकारिता का एक उज्ज्वल प्रतीक था। किन्तु दुर्भाग्य ने उनका पीछा फिर किया और पूंजी के अभाव में दो वर्ष बाद ही इसे बंद करना पड़ा। यह शुक्ल जी के कर्मठ व्यक्तित्व का ही साहस था कि उन्होंने बिना किसी प्रकार की सरकारी सहायता के हिन्दी समाचार पत्र के प्रकाशन का बीड़ा उठाया। शुक्ल जी का स्वाभिमानी स्वभाव ब्रिटिश नौकरशाही के आगे झुकना कभी स्वीकार नहीं करता था। हिन्दी पत्रकारिता के द्वार अकेले ही खोलने वाले इस विलक्षण व्यक्ति का 1853 में कोलकाता में निधन हो गया। 20वीं सदी के पहले दो दशक हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में 'द्विवेदी युग' के नाम से प्रसिद्ध हैं। साहित्यिक और सांस्कृतिक पत्रकारिता के प्रवर्तक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 1903 में 'सरस्वती' का संपादन संभाला और 1920 तक इसका संपादन करते रहे। इस अवधि में उन्होंने पत्रकारिता को नई दिशा और आयाम दिए, जिसके कारण इस काल को 'द्विवेदी युग' कहा जाता है।

'सरस्वती' का प्रकाशन जनवरी 1900 में इंडियन प्रेस, प्रयाग से शुरू हुआ। प्रारंभ में इसके संपादकीय बोर्ड में बाबू कार्तिक प्रसाद खत्री, किशोरी लाल गोस्वामी, बाबू जगन्नाथ प्रसाद दास बीए, बाबू राधाकृष्ण दास और बाबू श्याम सुंदर दास बीए शामिल थे। पत्रिका का आदर्श वाक्य था: सरस्वती श्रीति महति न दिया तम।

'सरस्वती' के प्रथम अंक में 59 विषयों पर निबंध थे। इसके संपादकीय की अंतिम पंक्तियाँ सराहनीय हैं: - "परम कारुणिक सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की असीम अनुकंपा से ऐसा अनूठा अवसर प्राप्त हुआ है कि आज हम हिंदी के आध्यात्मिक लोगों की सेवा में नए उत्साह से उत्साहित हैं और एक नया उपहार लेकर आए हैं जिसका नाम है सरस्वती।

द्विवेदी युगीन अन्य पत्र - पत्रिकाओं में राष्ट्रीय चेतना

भारतीय जीवन के कई अन्य पहलुओं की तरह ही, भारत में ब्रिटिश शासन ने भारतीय साहित्य की दिशा को प्रभावित करने और उसे आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राष्ट्रवादियों के स्थानीय और अंग्रेजी लेखन ने ब्रिटिश काल के दौरान और उसके बाद भारतीय राष्ट्रवाद के प्रति गहरी जागरूकता दिखाई। आधुनिक राष्ट्रवादी लेखन में अंतर्दृष्टि अतीत से इस मायने में अलग थी कि जो विचार प्रस्तुत किए जा रहे थे वे अधिक सुसंगत और संरचित थे। यह अतिरिक्त जानकारी के लाभ के कारण था और शत्रुतापूर्ण और प्रतिस्पर्धी विचारधाराओं से चुनौती के उपाय के रूप में भी था।

आधुनिक हिंदी साहित्य में राष्ट्रवाद की उत्पत्ति एक कहानी है जिसके केंद्र में नवयुग की कविताएँ और कवि हैं। इनमें से कुछ कवियों ने बेहतरीन नाटक, उपन्यास और लघु कथाएँ भी लिखीं। नवजागरण को मिशन बनाकर इन साहित्यकारों ने राष्ट्रीय पहचान और भारत की गौरवशाली विरासत के बारे में चेतना के माध्यम से नवजागरण लाने का प्रयास किया। उन्होंने देशी नायकों की वीरता, राष्ट्र द्वारा सामूहिक रूप से संजोए गए उच्च आदर्शों और सबसे बढ़कर धार्मिक परंपराओं का आह्वान किया। अगर कोई विशेष शैली थी जिसे नवजागरण की भाषा कहा जा सकता था, तो वह थी छायावाद।

हिंदी साहित्य में, अन्य स्थानीय भाषाओं की तरह, कविता, निबंध, उपन्यास, कहानी और नाटकों के माध्यम से भारतीय राष्ट्रवाद की व्याख्या करने वाले कुछ बेहतरीन लेखन हुए। हिंदी साहित्य में राष्ट्रवाद की व्याख्या करने वाले बहुत से लेखकों ने तत्सम और तद्भव (संस्कृत से ली गई शब्दावली या संस्कृत के मूल शब्द) का भी पालन किया। यह शुद्ध और प्राचीन हिंदी की विशेषता वाली शैली की वापसी भी थी, जो हिंदुस्तानी या फारसी उधार शब्दों से प्रभावित हिंदी से अलग थी। हालाँकि कुछ अन्य लोगों ने जानबूझकर भाषा को सरल रखा ताकि अपील लोकप्रिय हो सके।

निष्कर्ष

हिंदी पत्रकारिता में भारतेंदु हरिश्चंद्र का आगमन एक महत्वपूर्ण घटना है। उनके आगमन से हिंदी पत्रकारिता को बढ़ने के अधिक अवसर मिले। भारतेंदु हरिश्चंद्र के समकालीन लेखकों, साहित्यकारों और संपादकों की पत्रकारिता ने देशवासियों में राष्ट्रीय चेतना की भावना पैदा की। उनकी रचनाएँ देशभक्ति से ओतप्रोत हैं। समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं ने देशभक्ति के अलावा सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण से संबंधित रचनाएँ भी प्रकाशित कीं। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्यिक पत्रकारिता की शुरुआत की। उन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना को जन-जन तक पहुँचाया। उनके संपादन में प्रकाशित कविताओं और कहानियों से राष्ट्रीय आंदोलन को गति मिली। भारतेंदु और द्विवेदी युग की हिंदी पत्रकारिता ने यह साबित कर दिया है कि राष्ट्रीय चेतना के विकास में हिंदी पत्रकारिता का योगदान अमूल्य है। प्रस्तावित शोध के माध्यम से इसे साबित करने का एक छोटा सा प्रयास किया जाएगा।

संदर्भ

1. चतुर्वेदी, मोहन. पत्रकारिता और स्वतंत्रता का स्वर. इलाहाबाद: पथ प्रकाशन; c2013।
2. चौधरी, आनंद प्रकाश. भारतीय प्रेस और स्वाधीनता चेतना. दिल्ली: साहित्य भवन; c2016।
3. खन्ना, सुशील. पत्रकारिता में राष्ट्रवाद और जनमत निर्माण. दिल्ली: हिंदी प्रेस परिषद; c2011।
4. अवस्थी, संजय. हिन्दी पत्रकारिता के युग निर्माता. इलाहाबाद: साहित्यानुशासन प्रकाशन; c2008।
5. वर्मा, प्रभाकर. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी नवजागरण का इतिहास. वाराणसी: राजहंस प्रकाशन; c2014।
6. मिश्र, दीपक. उदन्त मार्त्तण्ड से आधुनिक मीडिया तक. नई दिल्ली: मीडिया विमर्श; c2017।
7. शर्मा, अनिल. हिन्दी पत्रकारिता में सामाजिक सरोकार. आगरा: भारतीय पब्लिशिंग हाउस; c2020।
8. पाण्डेय, यशवंत. पत्रकारिता और राष्ट्रनिर्माण. दिल्ली: ज्ञानदीप प्रकाशन; c2019।
9. सिंह, हरीश. हिन्दी के प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ और उनकी भूमिका. लखनऊ: विद्या प्रकाशन; c2015।
10. गुप्ता, सुभाष. भारतीय पत्रकारिता: ऐतिहासिक एवं सामाजिक अध्ययन. जयपुर: आर्य पब्लिशिंग; c2012।

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.